संस्कृत कैसे सीखें? (समास)

How to Learn Sanskrit? (Samaas)

आकृति ठाकुर[1] एवं योगेश शर्मा[2]

Aakriti Thakur[1] and Yogesh Sharma[2]

[1]शोधच्छात्रा, संस्कृत, दर्शन एवं वैदिक अध्ययन विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

[2]सह आचार्य, कलाकोश विभाग, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली

aakrititthakur2@gmail.com[1], ycsharma2000@yahoo.co.in[2]

https://doi.org/10.5281/zenodo.19667408

जैसा कि विगत दो लेखों में संस्कृत व्याकरण में पद–मीमांसा हेतु महत्त्वपूर्ण पक्ष समास प्रकरण का विवरण प्रस्तुत किया गया है। समास अर्थ–विज्ञान की दृष्टि से अत्यन्त उपयोगी हैं। समास के माध्यम से विस्तारपूर्ण अर्थ को संक्षेप में कहा जा सकता है। व्यवस्थित एवं सुबोध रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। परन्तु, व्याकरण की इस अर्थकारी एवं संश्लिष्ट प्रक्रिया को सम्यक् रूप से समझने हेतु सामासिक पदों की विश्लेषणात्मक व्यवस्था अपेक्षित है। इस व्यवस्था में केवल, अव्ययीभाव, तत्पुरुष समास एवं उनके उदाहरण स्वरूप शब्दों का विश्लेषण किया जा चुका है। इसी प्रक्रिया में बहुव्रीहि एवं द्वन्द्व समास का उल्लेख प्रस्तुत लेख में किया जा रहा है।

बहुव्रीहि समास

अन्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहिः अर्थात् बहुव्रीहि समास में अन्य पदार्थ प्रधान होता है। इसके चार अवान्तर भेद हो सकते हैं– 1. समानाधिकरण 2. व्यधिकरण 3. तुल्ययोग 4. व्यतिहार।

1. जब समास में आनेवाले पदों में एक ही प्रकार की विभक्तियों होती हैं तो समानाधिकरण बहुव्रीहि होता है, जैसे– निर्गतं भयं यस्मात् सः = निर्गतभय। यहाँ दोनों पद प्रथमा के एकवचन में प्रयुक्त हैं, अतः समानाधिकरण है।

समानाधिकरण बहुव्रीहि के उदाहरण निम्नलिखित हैं –

क्रम सं.	समास-विग्रह	सामासिक शब्द	अर्थ
1.	कृतं भोजनं येन सः	कृतभोजनः	पुरुषः
2.	प्रविष्टा शाला येन सः	प्रविष्टशालः	पुरुषः
3.	आरूढं यानं येन सः	आरूढयानः	पुरुषः
4.	चत्वारि मुखानि यस्य सः	चतुर्मुखः	ब्रह्मा
5.	क्षीणं वित्तं यस्य सः	क्षीणवित्तः	पुरुषः
6.	क्षीणं बलं यस्य सः	क्षीणबलः	राजा
7.	छिन्नं मूलं यस्य सः	छिन्नमूलः	वृक्षः

8.	पीतम् उदकं येन सः	पीतोदकः	अश्वः
9.	लम्बौ कर्णो यस्य सः	लम्बकर्णः	गणेश
10.	चित्राः गावः यस्य सः	चित्रगुः	चितकबरी गाय वाला
11.	शिक्षिताः कन्याः यस्मिन् सः	शिक्षितकन्यः	ग्रामः
12.	बहवः पण्डिता यस्यां सा	बहुपण्डिता	नगरी
13.	वीराः पुरुषः यस्मिन् सः	वीरपुरुषकः	ग्रामः

समानाधिकरण बहुव्रीहि के अन्तर्गत, मध्यपदलोप, नञ् एवं संख्या आदि प्रकारों के स्वरूप एवं प्रयोग को समझना भी अपेक्षित है। सर्वप्रथम, प्र आदि उपसर्गों से परे जो धातुज (कृदन्त) शब्द हैं, ऐसे प्रथमान्त का अन्य प्रथमान्त के साथ विकल्प से बहुव्रीहि समास हो जाता है और इस बहुव्रीहि समास में पूर्वपद में स्थित धातुज उत्तरपद का विकल्प से लोप हो जाता है, अतः मध्यपदलोप बहुव्रीहि कहलाता है। जैसे– प्रपतितानि पर्णानि यस्य सः = प्रपर्णः।

मध्यपदलोप बहुव्रीहि समास एक अन्य स्थिति में भी देखने को मिलता है। ऐसे समस्तपद जो कि षष्ठीतत्पुरुष समास से युक्त हैं और जिनके पूर्वपदों में षष्ठी, समुदायसम्बन्धी षष्ठी या विकार सम्बन्धी षष्ठी रही हो, उनका अन्य शब्दों के साथ बहुव्रीहि समास होता है, तब षष्ठी समास वाले शब्द के उत्तरभाग का लोप हो जाता है। जैसे–

केशानां संघातः = केशसंघातः (ष.त.)

केशसंघातः चूडा यस्य सः = केशचूडः (बालकः)

मध्यपदलोप बहुव्रीहि समास के उदाहरण निम्नलिखित हैं–

क्रम सं.	**समास-विग्रह**	**सामासिक शब्द**	**अर्थ**
1.	विगतः धवः (पतिः) यस्याः सा	विधवा	स्त्री
2.	निर्गता जना यस्मात् सः	निर्जनः	प्रदेश
3.	निर्गता घृणा यस्मात् सः	निर्घृणः	निर्दयी
4.	निर्गता स्पृहा यस्य सः	निःस्पृहः	क्रूर
5.	निर्गतं फलं यस्मात् तद्	निष्फलम्	कर्म
6.	उद्गतः गन्ध यस्य सः	उद्गन्धिः	जिससे गन्ध निकलती हो
7.	शोभनाः दन्ताः यस्याः सा	सुदती	सुन्दर दाँतों वाली स्त्री
8.	अध्यारोपिता ज्या यत् तद्	अधिज्यम्	प्रत्यञ्चा चढ़ी हो जिसपर ऐसा धनुष

9.	शोभनं हृदयं यस्य सः	सुहृत्	मित्र
10.	दुष्टम् हृदयं यस्य सः	दुर्हृत्	शत्रु

क्रम सं.	**समास-विग्रह**	**सामासिक शब्द**	**अर्थ**
1.	सुवर्णस्य विकारः सुवर्णविकारः अलंकारः यस्य सः	सुवर्णविकारः (षष्ठी तत्पुरुष) **सुवर्णालंकारः**	पुरुष
2.	उरसि स्थानि लोमानि यस्य सः	उरसिलोमा	जिसके उर में बाल हों ऐसा व्यक्ति
3.	कण्ठेस्थः कालो यस्य सः	कण्ठेकालः	शिव
4.	उष्ट्रस्य मुखम् उष्ट्रमुखमिव मुखं यस्य सः	उष्ट्रमुखम् (षष्ठी तत्पुरुष) **उष्ट्रमुखः**	ऊँट के मुख जैसा मुख है जिसका, ऐसा व्यक्ति
5.	गजस्य आननम् गजाननम् इव आननं यस्य सः	गजानन (षष्ठी तत्पुरुष) **गजाननः**	गणेश
6.	खरस्य मुखम् खरमुखम् इव मुखं यस्य सः	खरमुखम् (षष्ठी तत्पुरुष) **खरमुखः**	गधे के मुख जैसा मुख है जिसका, ऐसा व्यक्ति
7.	वृषस्य स्कन्धः वृषस्कन्ध इव स्कन्धो यस्य स	वृषस्कन्धः (षष्ठी तत्पुरुष) **वृषस्कन्धः**	बैल
8.	हंसस्य गमनम् हंसगमनमिव गमनं यस्याः सा	हंसगमनम् (षष्ठी तत्पुरुष) **हंसगमना**	हंस की तरह चलने वाली
9.	हरिणस्य अक्षिणी हरिणाक्षिणी इव अक्षिणी यस्याः सा	हरिणाक्षिणी (षष्ठी तत्पुरुष) **हरिणाक्षी**	हरिण की आँखों की तरह आँखों वाली

तदनन्तर, नञ् बहुव्रीहि समास के अन्तर्गत, नञ् से परे विद्यमानार्थक जो शब्द है, ऐसे प्रथमान्त का अन्य प्रथमान्त के साथ विकल्प से बहुव्रीहि समास हो जाता है और इस बहुव्रीहि के पूर्वपद में स्थित विद्यमानार्थक उत्तरपद का विकल्प से लोप हो जाता है। जैसे– अविद्यमानः पुत्रः यस्य सः = अपुत्रः।

इसके अतिरिक्त, संख्या बहुव्रीहि समास के अन्तर्गत अव्यय, आसन्न, अदूर, अधिक एवं संख्या– इन शब्दों का संख्यावाचक शब्दों के साथ समास होता है। जैसे– दशानाम् आसन्ना ये सन्ति ते = आसन्नदशाः।

क्रम सं.	समास-विग्रह	सामासिक शब्द	अर्थ
1.	अविद्यमानः क्रोधो यस्य सः	अक्रोधः	जिसका क्रोध विद्यमान न हो
2.	अविद्यमान भार्या यस्य सः	अभार्यः	जिसकी भार्या न हो
3.	अविद्यमानः कायः यस्य सः	अकायः	जिसका शरीर न हो अर्थात् ब्रह्म
4.	अविद्यमानः शिष्यः यस्य सः	अशिष्यः	जिसका शिष्य विद्यमान न हो
5.	अविद्यमानः प्रजा यस्य सः	अप्रजाः	जिसकी प्रजा न हो
6.	दशभ्योऽधिकाः	अधिकदशाः	दश से अधिक
7.	सहस्रात् अधिकाः	अधिकसहस्राः	सहस्र से अधिक

2. जब विग्रह में आने वाले पद भिन्न–भिन्न विभक्तियों में प्रयुक्त हो तो समस्त पद व्यधिकरण बहुव्रीहि होता है, जैसे– धनुः पाणौ यस्य सः = धनुष्पाणिः। यहाँ धनुः में प्रथमा तथा पाणौ में सप्तमी है, अतः व्यधिकरण है।

क्रम सं.	दो पदों का समूह		समासान्त पद
1.	गदा पाणौ यस्य सः		गदापाणिः
2.	भाले चन्द्रः यस्य सः		भालचन्द्रः
3.	चन्द्रः मोलौ यस्य सः		चन्दमोलिः
4.	विषः कण्ठे यस्य सः	=	विषकण्ठः
5.	चन्द्रः शेखरे यस्य सः		चन्द्रशेखरः

3. तुल्ययोग का अर्थ समान सम्बन्ध है। तुल्य योग का सूचक शब्द जब अन्य तृतीयान्त के साथ समस्यमान होता है तो वहाँ तुल्ययोग बहुव्रीहि होता है, जैसे– सह पुत्रेण आगतः = सपुत्रः।

क्रम सं.	दो पदों का समूह		समासान्त पद
1.	पुत्रेण सह वर्तते इति		सपुत्रः/सहपुत्रः
2.	कुटुम्बेन सह वर्तते इति		सकुटुम्बः/सहकुटुम्बः
3.	लोम्ना सह वर्तते इति		सलोमकः/सहलोमकः
4.	पक्षेण सह वर्तते इति	=	सपक्षकः/सहपक्षकः

4. व्यतिहार का अर्थ है– साध्य–साधन भाव से विनिमय होना। जब एक सम्बन्धी क्रिया को दूसरा व्यक्ति करने लगता है, दूसरे के लिए नियत क्रिया को जब पहला करने लगता है तब कर्म व्यतिहार होता है, जैसे– केशेषु केशेषु गृहीत्वा इदं युद्धं प्रवृत्तम् = केशाकेशि, अर्थात् एक दूसरे के बालों को पकड़ कर परस्पर युद्ध।

क्रम सं.	दो पदों का समूह		समासान्त पद
1.	केशेषु केशेषु गृहीत्वा इदं युद्धं प्रवृत्तम्		केशाकेशि
2.	बाहौ बाहौ च परस्परं गृहीत्वा इदं युद्ध प्रवृत्तम्		बाहुवाहवि
3.	दण्डैश्च दण्डैश्च प्रहृत्य इदं युद्धं प्रवृत्तम्	=	दण्डादण्डि
	मुष्टिभिः मुष्टिभिः प्रहृत्य इदं युद्धं प्रवृत्तम्		मुष्टीमुष्टि

बहुव्रीहि समास में शब्दों में कोई भी वचन आ सकता है पर लिंग वही होगा जो विशेष्यवाची शब्द का होगा। जैसे– पीतम् अम्बरम् यस्य सः, पीतानि अम्बराणि यस्य सः (बहुवचन)। पीत शब्द विशेष्य अम्बर के अनुसार बदलता है, किन्तु समास हो जाने पर विशेष्यवाची शब्द पीतम्बरधारी पुरुषः के अनुसार पुलिंग में प्रयुक्त होता है। पीताम्बरः स्त्रीलिंग में पीताम्बरा (पीतम् अम्बरं यस्याः सा) हो जाता है।

इन चार भेदों के अतिरिक्त तद्गुण संविज्ञान तथा अतद्गुण संविज्ञान दो भेद किये जाते हैं। जहाँ समासगत पदों के अर्थ का भी आश्रय अन्य पदार्थ से लिया जाय वहाँ तद्गुणसंविज्ञान बहुव्रीहि होता है, जैसे– चित्रवाससम् आनय (चितकबरे वस्त्रधारी को लाओ) में उसी व्यक्ति विशेष को लाया जाता है, जिसके कपड़े चितकबरे हों, अर्थात् जहाँ अन्य पदार्थ के गुणों की कार्य में अन्वयिता (योग्यता) के होने से संविज्ञान हो वहाँ तद्गुण संविज्ञान बहुव्रीहि होता है। केवल स्वभाविक सम्बन्ध की प्रतीति होने पर अतद्गुण संविज्ञान होता है। चित्रगुम् आनय (चित्रगु को लाओ), यहाँ चितकबरी गायों के मालिक (व्यक्ति विशेष) को ही बुलाया जाता है।

द्वन्द्व समास

अनेकं सुबन्तं चार्थे वर्तमानं वा समस्यते, स द्वन्द्वः, अर्थात् 'च' अर्थ में विद्यमान अनेक सुबन्त परस्पर विकल्प से समास को प्राप्त होते हैं और वह समास द्वन्द्व समास होता है। जहाँ दो पदों का इतरेतरयोग द्वन्द्व हो, वहाँ उत्तर पद के अनुसार द्विवचन और जहाँ दो से अधिक शब्दों का समास हो, वहाँ उत्तर पद के अनुसार बहुवचन होता है। समाहार द्वन्द्व में सदा एकवचन ही रहता है और वह नपुंसकलिंग होता है। 'च' के चार अर्थ होते हैं– समुच्चय, अन्वाचय, इतरेतरयोग और समाहार।

1. जब परस्पर निरपेक्ष अनेक पद किसी एक में अन्वित होते हैं तो वहाँ 'च' का अर्थ समुच्चय होता है। जैसे– ईश्वरं च गुरुं च भजस्व (ईश्वर को भजो और गुरु को भजो)

2. जहाँ कोई आनुषङ्गिक (अप्रधान) रूप में क्रिया में अन्वित हो रहा हो, वहाँ च का अर्थ अन्वाचय होता है। जैसे– भिक्षामट गां चानय (भिक्षार्थ भ्रमण कर, गाय को भी लेते आना)

   नोट– समुच्चय और अन्वाचय इन दोनों अर्थों में सामर्थ्य के अभाव के कारण समास प्रयुक्त नहीं होता।

3. जब अनेक पदार्थ मिलकर समूह बनाकर किसी एक क्रियादि से अन्वित होते हैं, तो वहाँ 'च' का अर्थ इतरेतर योग होता है। यथा–धवखदिरौ छिन्दि (धव और खदिर पेड़ों को काटो)

4. जब समूह एकीभूत होकर क्रिया आदि में अन्वित होता है, तो वहाँ 'च'का अर्थ समाहार होता है।

नोट– इतरेतर एवं समाहार में सामर्थ्य होने के कारण चाऽर्थेद्वन्द से द्वन्द्व समास होता है। द्वन्द्व समास के तीन भेद हैं–

1. इतरेतर द्वन्द्व 2. समाहार द्वन्द्व और 3. एकशेष द्वन्द्व।

1. **इतरेतर द्वन्द्व** – जब दो पदों का समाहार हो तो उत्तरपद के अनुसार द्विवचन तथा दो से अधिक का हो तो उत्तरपद के अनुसार बहुवचनान्त रूप बनता है। जैसे–

क्रम सं.	दो पदों का समूह		समासान्त पद
1.	रामश्च कृष्णश्च	=	रामकृष्णौ
2.	नरेन्द्रश्च महेन्द्रश्च शचीन्द्रश्च		नरेन्द्रमहेन्द्रशचीन्द्राः
3.	होता च पोता च नेष्टा च उद्गाता च		होतापोतानेष्टोद्गातारः
4.	धवश्च खदिरश्च		धवखदिरौ

2. **समाहार द्वन्द्व** – यह सदैव नपुंसकलिंग एकवचन होता है। समाहार द्वन्द्व का लौकिक विग्रह कई प्रकार से दर्शाया जाता है। यथा–

क्रम सं.	दो पदों का समूह		समासान्त पद
1.	संज्ञा च परिभाषा च	=	संज्ञापरिभाषम्
2.	संज्ञा च परिभाषा च तयोः समाहारः		संज्ञापरिभाषम्
3.	संज्ञा च परिभाषा चानयोः समाहारः		संज्ञापरिभाषम्
4.	संज्ञा च परिभाषा च समाहृते		संज्ञापरिभाषम्

3. **एकशेष द्वन्द्व**– माता के साथ पिता शब्द के कथन में विकल्प से पिता शब्द शेष रहता है। इसी प्रकार अन्य उदाहरण भी देखने को मिलते हैं।

क्रम सं.	दो पदों का समूह		समासान्त पद
1.	माता च पिता च	=	पितरौ / मातापितरौ
2.	हंसश्च हंसी च		हंसौ
3.	भ्राता च स्वसा च		भ्रातरौ
4.	पुत्रश्च दुहिता च		पुत्रौ
5.	श्वश्रूश्च श्वशुरश्च		श्वशुरौ/ श्वश्रूश्वशुरौ

नोट– विकल्प से पिता शेष होने से पितरौ बनता है।

इस प्रकार, समास के माध्यम से ज्ञात हुआ कि कैसे विस्तारपूर्ण अर्थ का संक्षेपण किया जा सकता है और व्यवस्थित एवं सुबोध रूप में उसे प्रस्तुत किया जा सकता है। व्याकरण की इस सार्थक एवं संश्लिष्ट प्रक्रिया के माध्यम से सामासिक पदों की विश्लेषणात्मक व्यवस्था में केवल समास, अव्ययीभाव समास, तत्पुरुष समास, बहुव्रीहि समास एवं द्वन्द्व समास आदि के भेद–प्रभेदों का उदाहरण सहित प्रस्तुतीकरण संस्कृत जिज्ञासुओं को लाभान्वित करेगा, ऐसी आशा की जाती है। अगले अंक में कारक–विधान (वाक्य–विन्यास) पर विचार किया जायेगा।

अनुवाद

1. पीताम्बरः वैकुण्ठम् अधिशेते।

(भगवान् विष्णु वैकुण्ठ में शयन करते हैं।)

2. चतुराननः नाट्यवेदोपदेशम् आचार्यभरताय दत्तवान्।

(ब्रह्मा जी ने नाट्यवेद का उपदेश आचार्य भरत को दिया।)

3. बहुपण्डिता–वाराणसी–नगरी विश्वनाथस्य स्थानमस्ति।

(बहुत से पण्डितों वाली वाराणसी नगरी में विश्वनाथ का स्थान है।)

4. रूपवद्भार्यः विवेकः पत्न्या सह वाटिकायां भ्रमणं कृत्वा गृहं गच्छति।

(रूपवती पत्नी वाला विवेक पत्नी के साथ वाटिका में भ्रमण कर घर को जाता है।)

5. चित्रगुम् आनय।

(चितकबरी गायों के मालिक को लाओ।)

6. सपुत्रः पिता आपणतः आगच्छत्।

(पुत्र से युक्त पिता बाजार से आ गए।)

7. गदापाणिहनुमान् समुद्रमार्गेण लंकानगरीं गतवान्।

(गदा जिनके हाथ में विद्यमान है, ऐसे हनुमानजी समुद्रमार्ग से लंका नगरी को गए।)

8. रामलक्ष्मणौ अरण्यं गतवन्तौ ।

(राम और लक्ष्मण वन में गए।)

9. कालिदासः जगतः पितरौ पार्वतीशिवौ नमस्करोति।

(कालिदास संसार के माता–पिता पार्वती और शिव को नमस्कार करते हैं।)

10. युधिष्ठिरभीमार्जुनाः कुरुक्षेत्रे समवेताः सन्ति।

(युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन कुरुक्षेत्र में एकत्रित हुए हैं।)

11. हरिहरगुरवः वन्दनीयाः सन्ति।

(विष्णु, शिव और गुरु वन्दनीय हैं।)

12. कण्ठेकालः सर्वेषु देवेषु पूजनीयः अस्ति।

(काल को कण्ठ में धारण करने वाले महादेव सभी देवों में पूजनीय हैं।)

13. चम्बलप्रदेशः निर्जनम् अस्ति यत्र निर्घृणाः चौराः निवसन्ति।

(चम्बल प्रदेश निर्जन है, जहाँ क्रूर चौर निवास करते हैं।)

14. विधवा आश्रमे पूजार्थं पुष्पाणि चिनोति।

(विधवा आश्रम में पूजा के लिए पुष्प चुनती हैं।)

15. किमपि कार्यं निष्फलं न भवति।

(कोई भी कार्य निष्फल नहीं होता है।)